Goddess Tara Mantratmak Kavacham

श्रीतारा मंत्रात्मक कवचम्

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933**,** +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

दशम महाविद्याओं में आपका द्वितीय स्थान है। इसलिये इन्हें 'द्वितीया' भी कहा जाता है। महाकाली का द्वितीय रूप तारा, महाकाली के समान ही शीघ्रफलप्रदाता है। तारा अपने भक्तों को सर्व आपदाओं से तार (उबार) देती हैं इसलिये इन्हें तारा कहा जाता है। तारा की सर्वप्रथम साधना महर्षि वशिष्ठ ने की थी। इसलिये इनका नाम वशिष्ठ आराधिता तारा भी पड़ा। वेदों में इनकी स्तुति करते हुए कहा है-

ब्रह्मतरो जयतारिणी मुक्ते, ब्रह्म विष्णु शिवशाखा युक्ते।

मोक्षफलं फलं अद्भुत सरसं, नित्यानन्दं कुरु-कुरु शमः।

तारा, एकजटा, नीलसरस्वती, तारिणी एवं उग्रतारा के रूप में मुख्य रूप से इनकी उपासना की जाती है। इसके अतिरिक्त इनके अन्य प्रमुख नाम इस प्रकार हैं:- विरुद्धवाक्यार्थ शरीरा, महाश्मशानवासिनी, ज्वलोच्चतामध्यसंस्था, नीलवर्णा, शवोपरिस्थिता, विश्वव्यापकतोयान्तः, श्वेतपद्मोपरिस्थिताम्, गुरुमुन्नतोदरी, खर्वा, नवयौवनस्था, पीनोन्नत पयोधरा,

व्याघ्रचर्म्मावृता, द्वीपिचर्मोत्तरीया, पिंगैकजटा, अक्षोभ्यनागसम्बद्ध जटाजूटम्, पंचमुद्राविभूषिता, श्वेतास्थिपट्टिकायुक्ता, करालाभीषणा, दंष्ट्राकोटि समुज्ज्वला, त्रिनयना, चतुर्भुजा, मुण्डमाला, अट्टाट्टहासा, अष्टनाग विभूषिता, पदार्थ दंष्ट्राद्वयविराजमाना, चन्द्रार्धकृतशेखरा, प्रत्यालीढा, श्वेताम्बरा, चन्द्रकान्ति।

महातंत्रा भगवती तारा का यह मंत्रात्मक दुर्लभ कवच अति गोपनीय एवं तंत्रप्रभाव वाला है। इसके प्रभाव से पुरश्चरण के बिना ही तारा मंत्र सिद्ध हो जाते हैं। इस महाकवच में तारा, काली, त्रिपुरसुन्दरी, मातंगी एवं दुर्गा आदि महादेवियों से रक्षा एवं कामना पूर्ति हेतु प्रार्थना की गयी है। कवच को विधिवत् सिद्ध कर नित्य पाठ एवं धारण करने से समस्त रोगों का नाश होता है, मंत्र शीघ्र जाग्रत होते हैं, सौभाग्य की वृद्धि होती है, शत्रुओं का मान मर्दन होता है, ग्रहदोषों से मुक्ति मिलती है, शरीर दिव्य शक्तियों द्वारा रक्षित होता है एवं महाविद्या तारा माता की कृपा दृष्टि प्राप्त होती है। गुरु से दीक्षा ग्रहण कर इनकी साधना करने से साधक वाक्सिद्धि, वैभव, धन, तेज एवं पराक्रम को शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है।

भैरवोवाचः–

इत्थमभ्यर्थितः श्रीमान् शंकरः प्रियया प्रभुः।

कृपया कवचं प्राह चतुर्वर्ग फलप्रदम्।।

शिवोवाच-

अस्ति गुह्यं महादेवि कवचं ब्रह्म सम्मितम्।

तारिण्या ब्रह्मरूपिण्या उग्रापत्तारणं नृणाम्।।

त्रैलोक्यविजयं नाम कवचं मंत्रविग्रहम्।

सर्वशक्तिमयं देवि सर्वारिष्ट विमर्दकम्।।

सर्वकामप्रदं सर्ववैरि हृदय शोषणम्।

विनियोगः- ॐ अस्य त्रैलोक्यविजयकवचस्य ऋषिरक्षोभ्य उच्यते, छन्दोऽनुष्टुप्, देवता श्रीदेवी मत्तोग्रतारिणी, ह्रीं बीजं, त्रीं परा शक्तिर्हमूस्य कीलकं स्मतम्, अमुकविजयकामे विनियोगः प्रकीर्त्तितः।

कुल्लुकां जानतः पुंसश्चाज्ञा पालनतत्पराः।

ब्रह्मविष्णुमहेशाद्यास्त्रिदशाः सर्वसिद्धयः।।

माहेश्वरी भयंकर्यौ नारसिंही तथैव च।

कुल्लुकाः स्युर्महोग्रायाः सर्वतंत्रेषु गोपिताः।।

वासुदेवो हरो ब्रह्मा तारिणी प्रकृति सदा।

एकमूर्तिः सदा चिन्त्या एकमूर्तिस्तु संस्थिता।।

तां च श्रीमूर्तिमूर्धाधः संयोज्य मध्यदेशतः।

कुल्लुका विविधा चर्या प्रत्येकं त्र्यक्षरी सदा।।

माहेश्वरीति विख्याता श्रीमत्कुल्लुकतारिणी।

ऊर्ध्वं रक्षतु सा नित्यं चतुर्वर्गफलाप्तये।।

महामेघप्रभां श्यामां कलाबहु समन्विताम्।

खंगर्त्तृधरां पीतवस्त्रां शवासनां स्मरेत्।।

प्रणवं भुवनेशानीमनन्ताद्यं शिवं तथा।

बिन्दुनाद समायुक्तं कूर्मबीजं तदनन्तरम्।।

नमस्तारायै सकलदुस्तरांस्तारय द्वयम्।

स्वाहान्तोऽयं भयंकरी श्रीमद्भुवनतारिणी।।

श्यामां द्वादशहस्तां च रक्तवस्त्रां शवासनाम्।

खंगकर्त्तृधरां नित्यां संस्मरेद् हृदयाम्बुजे।।

कूर्चं नृसिंहं क्रों कूर्चं लज्जामस्त्रं च कूर्चकम्।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

नारसिंहीति विख्याता श्रीमत्संकटतारिणी।।

श्यामां दशभुजां खड्गकर्तृहस्तां शवासनाम्।

शुक्लवस्त्रां सदा ध्यायेन् मूलाधार निवासिनीम्।।

श्रीकवचम्–

ॐ शिरो मे सततं पातु ह्स्त्रौं कुल्लुकतारिणी।।

शिखां मे पातु कलह्रीं देवी या ब्रह्मतारिणी।

शिरसो दक्षिणे भागे हसस्त्रीं वज्रतारिणी।।

पातु मां वामभागे तु वं सहूं दुर्गतारिणी।

शिरसः पश्चिमे भागे रक्ष फट् उग्रतारिणी।।

षड्क्षरी कुल्लुकेशी विजयानन्दतारिणी।

खड्गाम्भोजवराभीतिधारिणी मां सदाऽवतु।।

मणिधरि वज्रिणि ह्रीं हूं त्रीं सर्व वशंकरि।

प्रतिसरे रक्ष रक्ष मां ह्रीं हूं हूं फट् स्वाहायान्विता।।

शिखाग्रन्थिस्थिताऽवयान्मां देवी श्रीमणितारिणी।

ॐ ह्रीं हूं क्षौं सर्वविध्नानुत्सादय विदारय हूं फट् स्वाहा।।

विघ्नतारा दिक्षु मां पातु सर्वदा।

ॐ ह्रीं स्त्रीं आः सुरेखे हूं वज्ररेखे ठः फट् स्वाहा।।

पातु भुवि प्रीता मां सुरेखोग्रतारिणी।

इत्यष्टौ कुल्लुका मंत्रान् विन्यस्य साधकोत्तमः।।

चतुरशीतिभेदांस्तान् मूलस्थान् विग्रहे न्यसेत्।

ॐ शिरो मे ह्रीं स्त्रीं हूं फट् पातु मां पंचतारिणी।।

या देव्येकजटा नाम त्रैलोक्ये जाड्यहारिणी।

नेत्रयोर्ह्रीं स्त्रीं हूं पातु नीला देवी त्रिलोचना।।

भाले श्रीं ह्रीं स्त्रीं हंसः हूं फट् स्वाहा भीमतारिणी।

भ्रुवोर्मध्यं पातु नित्यं ॐ ह्रीं हंसः सहीं सहूं।।

फट् स्वाहा ज्ञानतारा या अज्ञानेन्धनदाहिनी।

ॐ ह्रीं हंसः श्रीं हंसः स्त्रीं हूं फट् श्रीं प्राणतारिणी।।

पातु मां नासिका मध्ये सर्वापत् क्षयकारिणी।

क्लीं ह्रीं स्त्रीं हूं ॐ क्लीं फट् पातु मोहनतारिणी।।

मुखपद्मेऽंक शाम्भोज वराभय कराम्बुजा।

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

ॐ ह्रीं हूं फट् पातु ओष्ठं लंबोष्ठी विश्वमोहिनी।।

आं ह्रीं ऐं हूं हूं हसस्त्रीं फट् अधरं पातु मे सदा।

अनन्त तारिणी देवी भोगमोक्ष फलप्रदा।।

ऐं ॐ हूं ऐं स्त्रीं ह्रीं फट् हूं ऐं वाक्तारिणी परा।

मां पातु वाक्प्रदा देवी वचने मंगलप्रदो।।

ॐ तारे स्त्रीं महातारे हूं तारिण्ययुग्रतारिणी।

रक्ष-रक्ष जगत्तारे हूं फट् तारिणी पाहि माम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं ज्रीं स्त्रीं ह्रीं फट् ऐं ह्रीं वद् वाग्विभवप्रदे।

सर्वज्ञा ज्ञापय स्त्रीं हूं जिह्वां मे रक्ष तारिणी।।

ऐं ह्रीं हूं स्त्रीं हसस्त्रीं फट् चार्चीं चण्डोग्रतारिणी।

पातु मे चिबुकं देवी चण्डभीति विनाशिनी।।

ॐ कलह्रीं हूं हसस्त्रीं क्लीं क्लीं फट् कालतारिणी।

कपोलौ पातु मे उग्रा स्वर्णाभा नागकुण्डला।।

ॐ युं हूं हूं श्रीं हसस्त्रीं क्लीं ह्रीं ह्रं ह्रीं हूं फट् ऐं सदा।

कर्णौ पातु महामाया विद्या श्रीशब्दतारिणी।।

ॐ श्रीं ग्लौं गं हूं हसस्त्रीं ऐं गंडौ पातु मे सदा।

पद्मयुग्म वराभीति धारिण्य भयतारिणी।।

ॐ क्लीं किलि-किलि स्त्रीं फट् कंठ पातु सुतारिणी श्रीं श्रीं ह्रीं ऐं स्त्रीं च्लूं हसस्त्रीं हूं फट् स्त्रीं हूं क्षें हूं करालिनी रक्ष-रक्ष महातारे हूं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्। ॐ ज्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं हसस्त्रीं हूं फट् ग्रीवां रक्ष तारिणी।

ॐ ह्रीं हूं त्रीं क्लीं हसस्त्रीं भस्त्रीं जये-जये महोग्रे पिंगलजटे ह्रीं स्त्रीं हूं फट् स्वाहाऽवतु स्कन्धौ मे जयदा पातु देवी विजयतारिणी।

ॐ हूं ह्रीं त्रीं ह्रीं द्रां द्रीं क्लृं हंसः ऐं हूं फट्। बाहुमूले पातु नित्यं मम सा जयतारिणी। ॐ द्रां द्रीं द्राविणि क्लिन्ने द्रावय-द्रावय द्रुतं।

सर्वशत्रून् महामाये महातारिणी ह्रीं सह्रीं फट् स्वाहा बाहुमध्यं मे पातु विद्रावतारिणी।

ॐ ह्रीं क्षं भमलवरयूं क्ष्रीं क्षीं हूं सह्रीं सः फट्। करौ पातु सिद्धितारा मम सर्वार्थसाधिनी। आं ह्रीं क्रों हूं हसस्त्रीं फट् अंगुलीर्बुद्धितारिणी। ॐ खफ्रें स्त्रीं हूं हंसः क्ष्रीं नखानखण्डतारिणी।

ॐ ह्रीं हूं द्रां द्रीं हूं च्लूं स्त्रीं सः खफ्रें चण्डयोगिनी योगेश्वरि महातारे तारकासुर मर्दिनि मर्दम प्रमयान् दुष्टान् मम शत्रून् विदारय शोषय त्रोटय क्षां क्ष्रीं धूं धूं बन्धय-बन्धय सर्वारिष्टं संहर स्त्रीं करौ महोग्रतारिणी पातु मे विजयानन्ददायिनी खंगधारिणी।

ॐ स्त्रीं हूं यरलवससहूं हसक्षमलवरयूं ह्रीं ह्रीं ॐ कुक्षिदेशं मे पातु योगिनीतारिणी। ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं सः क्लीं क्लीं विमोक्षदे हंसः क्लीं सह्रीं पाहि मां पार्श्वयोर्भृगुतारिणी स्वाहा हंसः।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् सोऽहं महोग्रतारिणी।

पाहि मां हृदयासन्ना प्राणशक्त्युपवृंहिता।।

ॐ तारे तारय त्रीं हूं हंसस्त्रैलोक्य त्राणकारिणी।

हूं फट् स्वाहा स्तनद्वन्दं रक्ष मे विजयप्रदे।।

ॐ क्षां हूं कलहस्त्रीं फट् कालरुद्रनिवारिणी।

रक्ष-रक्ष हूं फट् ऐं हूं उदरं रुद्रतारिणी।।

ॐ ह्रीं भस्त्रीं हसस्त्रीं फट् नाभिं मे जीवतारिणी।

ह्रीं क्लीं हूं सहस्त्रीं फट् लिंगं प्रजनतारिणी।।

ॐ ह्सौं ह्रीं हसस्त्रीं हूं हूं क्लीं स्त्रीं फट् सदा मम।

आधारं पात सा देवी त्रैलोक्यधारतारिणी।।

ॐ हूं ह्रीं स्त्रीं जृम्भिनि श्रीं ह्रीं वशिनि क्लीं मोहिनि द्रां द्राविणि मे शत्रून् हन द्रावय मोहय क्षोभय क्षोभय हूं हूं द्रुतं जुम्भय-जुम्भय तारे तारिणी रुद्रास्थिधारिणी ब्रह्मरूपिणि ब्रह्मविष्णुशिवत्राणकारिणि क्षीं फट् अम्बिके रक्षिणि तारिणि देवि त्रिखण्डं पातु मे सदा। हूं ह्रीं स्त्रीं श्रीं हसस्त्रीं ह्रीं हूं फट् स्वाहा ममाऽवतु। नितम्बस्थूल सर्वांगी सर्वदा सर्वतारिणी ह्रां हूं ह्रीं क्लीं ब्लूं स्त्रीं हूं फट् ऊरू मे भंगतारिणी।

ॐ झ्रीं ज्रीं क्रीं हसस्त्रीं फट् हूं ह्रीं जम्भय मोहय स्तम्भय द्रावय द्रां द्रीं क्लीं च्लूं सः शत्रुपक्षगान् मम जानुयुगं रक्ष देवी जम्भकतारिणी। ॐ श्रीं हूं ह्रीं ज्रीं झ्रीं श्रीं हूं हूं ममाऽवतु। जंघायुग्मं महादेवी पातु सा भ्रमतारिणी। ॐ ह्रीं गां गीं ग्लौं गूं गैं गौं ग्लौं हूं स्त्रीं फट् परमेश्वरी। गुल्फयुग्मं सदा पातु देवी श्री गणतारिणी।

ॐ हूं फट् पादपृष्ठं पातु परोक्षतारिणी। ॐ हूं ह्रीं फट् महातारा पातु मे चरणांगुलीः।। ॐ ह्रीं स्त्रीं ग्लौं लं हसस्त्रीं हूं फट् स्वाहास्वरूपिणी। पादाधः पातु मे नित्यं देवी श्रीभूमितारिणी।

ॐ क्षौं क्ष्रीं हूं ह्रीं स्त्रीं ह्सौं फ्रें फट् ईश्वरि। तुरु-तुरु स्त्रीं

श्रीं ह्रीं हूं वज्रतेजोमये ऐं फट् सर्वास्त्रशस्त्रवारिणी सर्वप्रहरण निसूदिनि सर्वकृत्याभिचार ग्रहारिष्टनिवारिणि सर्वास्त्राणि स्तम्भय स्त्रीं मर्दय ह्रीं विदारय भंजय द्रां बन्धय क्लूं सन्तापय ह्सौं ह्रः फट् महोग्रतारिणी विद्या रोमकूपानि मेऽवतु। सर्वायुधकरा देवी सर्वतोऽभयदायिनी।

ॐ ह्रीं भ्रूं त्रूं रुं ज्रूं हूं नमो भगवति दंष्ट्रिणि भीमवक्त्रे महोग्ररूपे कालिके केलिनिश्चले क्लुं क्लुं क्लुं विद्युज्जिह्वे हूं हूं कटिश्रोणिमांसाभरणे विशालमुण्डमालाधारिणि द्रावय-द्रावय महारौद्रि परभटगजाश्व हृच्छोषिणि अखिलदृष्टिमूषिणि निखिलास्त्रपरीवर्त्तकारिणी भ्रकुटीकृत नयने विषमनेत्रे महारक्त वसामांसवसामेदो पलिप्तगात्रे कहकह महमह भ्रूंदभ्रूंदनानाजीमूतवर्णे विस्रवद्घंटावकीर्णदेहे शवमांसप्रिये बिम्बे-बिम्बे रणबिम्बे रौद्ररूपे ह्लौं ह्लौं ह्लः कुन्त-कुन्त आकर्षय-आकर्षय धुनु-धुनु हें हः खफ्रें विजृम्भिनि हूं क्षौं नमो जय त्रैलोक्यविजये हूं फट् स्वाहा त्रैलोक्यविजया तारा सर्वांगं मे सदाऽवतु।

ॐ ह्रीं स्त्रीं चां चीं चैं हूं फट् श्रीं ह्रीं महेश्वरि हूं विद्युत्प्रभे विद्ये विजयानन्ददाऽवतु। ॐ ह्रीं स्त्रीं चां चीं चैं हूं फट् श्रीं ह्रीं महेश्वरि हूं विद्युत्प्रभे विद्ये विजयानन्ददायिनी चिदानन्दमये देवि चेतने चित्स्वरूपिणि हंसः हंसां हंसीं हूं सः पातु चैतन्यतारिणी।

इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा अष्टाधारान् प्रविन्यसेत्। शिवशक्तयात्मकैर्वर्णैस्तारिणी मंत्रसंयुतै।

ॐ ह्रीं स्त्रीं डां डीं डूं डैं डः डरलकसहैं हूं वं शं षं सं ग्लौं भूमितत्त्वात्मिके डाकिनी तारिणि कालाग्निरुद्रसहिते ममाधारं सदाऽवतु। ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौं यरलवसहूं ह्सौं हसखफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं ॐ आधारवासिनी कालाग्निरुद्रसहिते ममाधारं रक्ष–रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं हूं रां रीं रूं रैं रौं रः स्त्रीं रडलकसहैं ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें स्त्रीं लवरयूं ह्सौः सः फट् श्रीं ह्रीं ऐं बं भं मं यं रं लं राजसि आप्याश्रये ब्रह्मणा सहिते पाहि अधिष्ठानं जगन्मयि विघ्नान् मे जलजान् छिन्धि रक्ष राकिनि तारिणि।

ॐ स्त्रीं ह्रीं लां लीं लूं लैं लौं लः फट् ह्सौः सः फट् लडरकसहौं ह्रैं ह्रः ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौः हसक्षमलवरयूं ह्सौः हसखफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं सात्त्विके जीवात्मरूपिणी श्रीं ह्रीं रुद्रानन्दप्रदायिनी तेजोमये ज्वलत्कालानलदीप्ते महेश्वरि मणिपूरं सदा पाहि देवि लाकिनि तारिणी ॐ ह्रीं हूं कां कीं कूं कैं कौं कः स्त्रीं हसौं सः क्लीं कलडरसहौं हूं श्रीं हसखफ्रें ह्सौं ह्सौं हसक्षमलवरयूं ह्सौं हसखफ्रैं श्रीं ह्रीं ऐं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं फट्।

परतत्त्वात्मिके देवि जगच्चैतन्यकारिणि। विष्णुवक्षःस्थलावासे कमले कमलालये। क्लींकारे कामदे देवि प्राणाशक्ति प्रबोधिनि। अनाहतं रक्ष नित्यं देवि काकिनि तारिणि।

ॐ ह्रीं त्रीं हूं ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रैं स्त्रीं ह्सौः फट् परापरे सां सीं सूं सैं सौं सः ह्रीं सः सडरलकहौं ह्रीं ह्रं ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्सौं क्षमलवरयूं ह्सौं हसखफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं फट् परापरापरे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः फट् आकाशात्मिके देवि विद्युन्मतिविरोचने हिरण्यगर्भाश्रये देवि ग्लौः हूं विशुद्धं पाहि मे सदा। चण्डमण्डल संकाशे देवि साकिनि तारिणि।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हां हीं हूं हैं हौं हः फट् श्रीं हसकलरडैं ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ल्हौः ह्रीं त्रीं फट् ठं ठः स्फुर-स्फुर लव प्रक्ष सहस्त्रीं ह्सौं हसखफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं हं क्षं हं सः हूं सोहं ह्रीं फट् मनोमये ब्रह्मतारालये ईशे सदाशिवहृदि स्थिते साभिलाषं मनो नित्यं पाहि हाकिनि तारिणि।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हं यां यीं यूं यैं यौं यः सौं हं हं सीं स्त्रीं ह्सौं ऐं ह्रीं श्रीं हूं हसखफ्रें ह्सौं भगवत्यम्ब चिन्मये बुद्धितत्त्वात्मिके हसक्षमल वरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौं सहखफ्रें श्रीं

ह्रीं ऐं प्रज्ञां रक्ष जगन्मये निखिल प्रपंचरूपिणि हंसः सोहं ह्सौं सः फट् जगतत्त्वात्मिके देवि एकपत्रं ममाऽवतु।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं जगद्धात्रि जगदानन्ददायिनि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्त्रीं फट् जगदाह्लादरूपिणि ह्रोंकार मे अहंतत्त्वं पातु सच्चित्स्वरूपिणी ऐं ह्रीं श्रीं हसखफ्रें ह्रीं हूं क्लीं सः ह्सौं स्त्रीं फट् अघोरमुखि तोर हूं सर्वप्रत्ययकारिणि ह्सौं ऐं ह्रीं हसखफ्रें सक्लीं हूं श्रीं ह्सौं ह्रीं ऐं सः सहस्राराधिष्ठिते हूं ह्रीं महाशिवविभूषणे रक्ष रक्षाहङ्कृति मे जगच्चैतन्यतारिणि।

ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं हसस्त्रीं हसकलह्रीं ह्सौं तारिणि ब्रह्मतारिणि हसौं हसखफ्रें हश्रीं श्रीं ह्रीं ऐं परमे परमे परे घोरे घोरे महाघोरे अघोरे घोररूपिणि घोरघोरतरे भस्रां भस्रीं हूं हूं परमेश्वरि चिदानन्द परब्रह्मतारिणि श्रीं सः ह्रीं सः फट् परमे शिवपर्यंके शुद्धपद्मासनस्थिते सहजानन्द सुस्निग्धे पाहि मामुग्रतारिणि नवतारा प्रविन्यस्य षडंगं विन्यसेत् पुनः।

ऐं क्लीं सौं ॐ हसस्त्रीं हूं ह्रीं स्त्रीं फट् स्वाहा। हृदयेऽवतु खंगोत्पलवराभीतिधरा भैरवतारिणि ऐं क्लीं सौ ई ऐं कलह्रीं हसकलह्रीं सक्लां क्लीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं स्त्रीं हूं ऐं क्लीं सौः मातंगिनि

मोहिनि ह्रीं श्रीं हूं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं ऐं हूं फट् स्वाहा ह्रीं शिरसे पातु देवि खंगोग्रतारिणि।।

ॐ इं कलह्रीं श्रीं ह्रीं हूं स्त्रीं हूं फट् हसकलह्रीं स हूं ह्रीं शिखां पाहि मम त्रैपुरतारिणि ह्रीं स्त्रीं हूं श्रीं ह्रीं त्रीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा वज्रतारे ममांगे वज्रतां कुरु। कवचं मम सर्वांगं रक्ष श्रीवज्रतारिणि।

ॐ हूं ह्रीं ऐं क्लीं सौः नमो मातंगतारिणीश्वरि। सर्वमुखरंजनि श्रीं सर्वसत्त्ववशंकरि स्त्रीं सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सर्ववैरिवशंकरि ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं हूं हस्त्रीं सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्टवशंकरि ऐं क्लीं सौः नेत्रमण्डले सदा स्थिता पाहि तारे मातंगि विश्वमोहिनि।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्सौः स्त्रीं ह्रः फट् स्त्रीं हूं ह्रीं ॐ कालि कालि ॐ ॐ ॐ ह्रः स्त्रीं हूं खफ्रें क्षौं क्षः स्त्रयौः स्त्रयः सहैं हं सः नमो भगवति सस्फृं प्रचण्डबालिके खंगशूलगदाधारे हूं हूं ह्रें ह्रैं सर्वशक्तिधरे सर्वारिसूदनि रक्तमांसाशने भीमे खर्पखट्वांगधारिणि मां रक्ष-रक्ष विजये मम शत्रून् विनाशय-विनाशय सर्वदुष्टानरिष्टान् निवारय सर्वग्रहयक्षभूत क्रूरमातृभयं हन कूष्माण्ड भैरव क्षेत्रपाल डाकिन्युरंगमान्

निवारय-निवारय खेचरान् ब्रह्मराक्षसान् ये मां हिंसन्ति प्रत्यक्षं कृत्याद्रोहस्य कारकाः परोक्षे वा तान् ज्वल ज्वालिनि हूं हन क्षयं नय-नय प्रमर्दय-प्रमर्दय प्रणाशय-प्रणाशय शोषय-शोषय भ्रूं रुं क्ष्रौं क्ष्रौं भ्रैं फट् करद्वयम्। कालिकामंत्रतो न्यस्य गायत्र्या व्यापकं चरेत्।

ह्रीं स्त्रीं हूं फट् एकजटे विद्महे ह्रीं स्त्रीं हूं परे नीले विकटदंष्ट्रे ह्रीं धीमहि। ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ऐं सः स्त्रीं तन्नस्तारे प्रचोदयात् मां पाह्युग्रतारिणि। ॐ अक्षोभ्यः शिरः पातु सर्वदा क्षोभकारकः। पूर्व ऐं ह्रीं श्रीं ॐ मां रोचनः पातु सर्वदा। ऐं ह्रीं श्रीं ॐ पश्चिमेऽव्यात् सर्वदा सिद्धिनायकः। ऐं ह्रीं श्रीं हूं फट् आग्नेय्यां नामको मां सदाऽवतु।

ऐं ह्रीं श्रीं हूं फट् नैर्ऋत्यां मां पातु मामकः सदा। ऐं ह्रीं श्रीं हूं फट् वायव्यां पातु पावकः। सदा ऐं ह्रीं श्रीं हूं फट् ऐशान्यां तारकः पातु मां सदा। तद्बहिः पूर्वदिग्भागे ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमो नमो ब्रह्माणि रक्ष-रक्ष हंसवाहिनि हंसिनि आं ह्रीं क्रों ह्रीं ह्सैं स्त्रीं सः असितांगनिषेविते रक्ष-रक्ष महामाया हंसः सोऽहंस्वरूपिणि। आग्नेय्यां ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं स्त्रीं हूं फट् ईं ह्रीं नमो नमो माहेश्वरि वृषारूढे शूलहस्ते ममाभये हें हौं हूं ह्रीं श्रीं

रक्ष-रक्ष मां रुरुभैरवभूषणे ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं ऐं नमो भगवति ह्रीं ह्रीं कौमारि मां रक्ष-रक्ष दक्षिणे शिखिवाहने शक्तिहस्ते ऐं ह्रीं हैं चण्डभैरवभूषिते ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं हूं फट्।

ॐ ग्लौं नमो भगवति स्रुवं वाराहि मां रक्ष-रक्ष दंष्ट्रायुधे महाबले उन्मत्तसहिते विद्ये नैर्ऋत्यां रक्ष मां सदा। ऐं ह्रीं हूं ॐ क्लीं हैं हंसः सोहं नमो नमो भगवति वैष्णवि श्रीं ह्रीं त्रीं गरुडवाहिनी चक्रायुधे मां रक्ष-रक्ष ऐं जौं हौं हं सौः सः फट् मायासहस्र परिवर्त्तिनि क्रोधभैरवभैरवि प्रतीच्यां रक्ष देवेशि सर्वविघ्नान् निवारय ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं द्रीं त्रीं हसैं ऐं त्रां इं ऊं ह्रीं नमो नमो भगवत्यजिते ऐन्द्रि गजराजोपरिस्थिते वज्रहस्ते हैं ह्सौं मम वैरिविनाशिनि कपालिसहिते रक्ष वायव्यां दिशि मां सदा।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ स्त्रीं हूं फट् चां चीं चैं नमो भगवति श्रीं चामुण्डे शववक्षःस्थे खट्वांगायुध धारिणि ह्रौं ह्रीं ह्सौं भीषणाख्ये उदीच्यां रक्ष मां सदा ऐं ह्रीं श्रीं ऊं ईं लं ह्रीं ॐ ह्रीं स्रीं स्त्रीं हूं फट् नमो नमो भगवति महालक्ष्मि पद्मासनसंस्थिते परे पद्मायुधधरे ॐ ह्रीं ह्क्लीं ह्क्लीं ह्सैं हस्त्रीं विभूतिदे संहारभैरवानन्दे ऐशान्यां पाहि मां सदा।

ऐं हैं हौं हेतुकः पातु पूर्वे ऐं वं हूं फट् ह्रौं स्लौं सः फट् आग्नेये त्रिपुरान्तकः क्लौं हूं याम्ये ऐं वं वह्निवेतालः पातु मां भयाद् दक्षिणेऽध्यादग्निजिह्वः ऐं अं कं नैऋत एव मे हूं ह्रीं क्रें ईं कां भ्रूं ह्रीं हूं कालाक्षः पातु मां सदा। वायव्यकोणे ऐं मं हूं मतयो भैरवोऽवतु। उदीच्यां एं ऐं हूं फट् एकपादः सदाऽवतु ऐं भीमा मां पातु भीमवटुक ऐशान्यां पातु मां सदा।

ॐ तारे तारे महातारे उत्तारे भयतारिणि। ॐ ह्रीं श्रीं ज्रीं हूं क्रों वं क्रों लं वज्राश्मास्त्राणि मर्दय-मर्दय द्रावय ह्रीं ह्रः कह-कह विमोडय-विमोडय हसस्त्रीं फट् स्वाहेन्द्रास्त्रात् पाहि तारिणि।

ॐ तारे वं विश्वतारे ह्रीं स्त्रीं वारुणतारिणि। वं क्रों वं क्रौं अग्न्यस्त्राणि स्तम्भय द्रावय द्रुतं परिवर्त्तय कर्तयाशु भ्रामयास्त्रं विदारय संकोचय छेदय स्त्रीं सर्वशत्रून् विनाशय अग्न्यस्त्रेभ्यः पाहि मां त्वं वह्निस्तम्भनतारिणि।

ॐ ह्रीं तारे महातारे कालदण्डविनाशिनि हूं क्रों हसक्रों फट् दण्डास्त्राणि निवारय भंजय त्रोटय क्षुन्न छिन्धि-छिन्धि विपाटयास्त्रं स्तम्भय-स्तम्भय क्ष्रीं ह्रीं याम्यास्त्राद् रक्ष तारिणि।

ॐ क्लीं ह्रीं त्रीं विष्णुतारे सर्वासुरविदारिणि असुरास्त्राणि सर्वाणि निवारय विदारय भंजय त्रोटय कुन्तं मर्दय त्रोटय द्रुह

सर्वासुर प्रररणेभ्यः आः सुरेखे-सुरेखे हूं वज्ररेखे विदारिणि क्षौं क्षीं क्षुं ह्रीं हूं फट् हसौः कृत्याद्रोह प्रणाशय मायाव्यूहं विदारय त्रीं त्रासिनि मां रक्ष आसुरास्त्रेभ्य ईश्वरि।

ॐ ह्रीं त्रीं हूं महातार ह्रं ह्रः क्रों वं क्रों वं क्रों क्षूं क्षौं वषट् ज्वल-ज्वल शूलिनि क्ष्रीं दुष्टग्रहभयापहे हूं फट् स्वाहा वरुणास्त्रकृत्या द्रोहान् निवारय शोषय क्षोभय क्ष्व्यं फट् भिन्दि भिन्दि विलोपय आप्यदुर्गा आपदोऽस्मान् दुर्गे दुर्गे रक्षिणि फट् स्वाहा मां पश्चिमे पातु श्रीदुर्गोत्तारिणि तु या।

ॐ ह्रीं श्री भीमतारा या ज्ञेया गिरिवराश्रया। महाकटा महावेगा महाधीरा महावला। ह्रां ह्रां स्थां स्थीं महोच्छुष्मा वाद्यस्त्राणि विनाशय। धूं धूं धूमावति क्लिन्ने क्लेदय द्रावयाऽहितान् आधारतारिणि छिन्धि समीरास्त्राणि मे रिपोः।

ॐ ह्रीं हूं वज्रवैरोचनीये वज्रतारिणि हूं हूं फट् स्वाहा ह्रैं सक्लीं गदां चूर्णय भंजय यक्षास्त्राणि यक्षमायां द्रीं द्रावय द्रीं विमोचय उदीच्यां रक्ष मां देवि परितो वज्रतारिणि।

ॐ ह्रीं स्त्रीं क्लीं स्त्रीं कालरुद्रशक्ति तत्त्वस्वरूपिणि ह्रैं ह्रौं क्ष्रौं महातारे तारिणि ब्रह्मस्वरूपिणि प्रचण्डे प्रमथास्त्राणि भंजय ह्रीं ह्रः खण्डय रौद्रकृत्यापशुनुग्रान् प्रमथान् सर्पराक्षसान्

ब्रह्मराक्षसवेतालानुत्सादय निवारय रुद्रास्त्रेभ्यः सदा पाहि मां त्वं प्रचण्डतारिणि।

ॐ ह्रीं हंसः क्रों ॐ हंसः छ्रां सोहं क्रों वषट् हक्लीं सक्लीं हसक्लीं फट् हूं स्त्रीं ब्रह्मोग्रतारिणि द्रुतं ब्रह्मास्त्राण्युपशान्तिं त्वं नय विश्वात्मिके शिवे वेदोदिताः क्रियाः सर्वाः कृत्याद्रोहफलप्रदाः। ये मामुद्दिश्य कुर्वन्ति तांस्तान् हिंसन्तु हिंसकान्। प्रचण्डतारिणि चक्रभीत्या क्रोधाग्निधर्षिता।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हसस्त्रीं ह्रीं गां गीं गूं गैं गौं गः सः फट् ऐं ह्रीं श्रीं हूं स्लूं सुपर्णे क्रों अम्बान्तां सहौं ह्सौः हंसः सोहं नागबाणान् हन संहन द्रां द्रीं ह्रीं च्लूं स्त्रीं हसस्त्रीं खै खें क्षः तार्क्ष्यतारिणि विषसर्पभयास्त्राणि संहाराखिलभीतिहेतिनागपाशान् संहरैहि देवि श्रीतार्क्ष्यतारिणि। इति शत्रोरस्त्रदुर्गं निराकृत्य विशुद्धधीः। पठेदिमं महामंत्रं सर्वभीति विनाशनम्।

ॐ ह्सौं वसहूं कलह्रीं हसस्त्रीं फट् नरान्त्रमालाभरणभूषिते महाकौलिनि महाब्रह्मवादिनि महाधनोन्मादकारिणि महाभोगप्रदे अस्मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु–कुरु दुर्जनान् हन–हन महीपालान् क्षोभय–क्षोभय परचक्रं भंजय–भंजय जयंकरि गगनगामिनि यमलवरयूं हयमलवरयूं भमलवरयूं शमलवरयूं क्षमलवरयूं

भमलवरयूं हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयूं हंसः सोहं हूं ह्रीं स्त्रीं ह्सौं द्रां द्रीं द्रूं त्रां त्रीं त्रूं त्र्यैं त्रौं त्रौं त्रः श्रीमत्कुल्लुकतारिणि सर्वत्र मां रक्ष-रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं स्त्रीं श्रीं ह्रीं महादेवि अश्वारूढा जयप्रदा वाहनानि पातु नित्य मम सर्वार्थसाधिनि। ह्रीं ह्रैं सुरेखे देवि हूं हूं फट् रथं ममाऽवतु रां रीं रुं रैं रौं रः रक्षिणि हूं फट् परमानन्दतारिणि।

ॐ हूं पुष्पकेतु राजार्हते गतागतायै सम्यगुदितायै सग्रहराशि नक्षत्रायै उदितादित्यमण्डल वर्त्तिन्यै नित्यचैतन्योदितायै ह्रीं त्रीं परज्योतिस्तारायै हूं फट् स्वाहा ह्रीं ज्योतिस्तारिणि क्लिन्ने क्लेदिनि मे ध्वजं सदा रक्ष-रक्ष वैरिपक्षान् क्षयं कुरु नमोऽस्तुते।

ॐ क्लीं कामाकर्षिणी मां पातु सर्वार्थसाधिनि तेजोकर्षिणी बुद्धयाकर्षिणी ज्ञानाकर्षिणी चित्ताकर्षणादेवी च मोहाकर्षकरूपिणी तपाकर्षिणी शस्त्राकर्षिणी भूताकर्षिणी वाहनाकर्षिणी मंत्राकर्षिणी क्षेत्राकर्षिणी दुर्गाकर्षणरुपा च रत्नाकर्षणरूपिणी।

अंहकाराकर्षिणी च योगाकर्षणरूपिणी।

विद्याकर्षणरूपा च श्रद्धाकर्षणरूपिणी।।

ओजआकर्षिणी चैव स्तम्भिनी मोहिनी तथा।

द्राविणी क्षोभिणी चैव वशीकरणरूपिणी।।

आकर्षिणी सम्मोहिनी पंचवाणेश्वरी परा।

सर्वरूपा महातारा समरे पातु मां सदा।।

अरण्ये प्रान्तरे भीमे निरालम्बे जलप्लवे।

वराभ्याम्भोजहस्ता पातु मामुग्रतारिणी।।

विषमे संकटे धीरे कान्तारे पर्वतालये।

खंगाम्भोजधरा देवी पातु मां दुर्गतारिणी।।

सिंहव्याघ्रसमाकीर्णे कानने भीषणालये।

भीमद्रंष्ट्रा पातु नित्यं खंगखर्परधारिणी।।

सभायां शास्त्रवादे तु रिपुसंघमाकुले।

मुष्टियन्त्रितहस्ता मां पातु नीलसरस्वती।।

खर्वा प्रत्यालीढपदा शवासनगता शिवा।

मुष्टिहस्तास्मृता देवी सद्यः स्तम्भयतेऽखिलान्।।

क्षरत्पीयूषकलिका सौम्यस्मेराम्बुजानना।

रोगेभ्यः पातु मां नित्यं देवी याऽमृततारिणी।।

प्रमथेभ्यः पिशाचेभ्यो राक्षसेभ्यो ग्रहादपि।

ब्रह्मराक्षसवेतालकूष्माण्डादिभ्य एव च।।

सर्वत्र रक्ष मां देवि सिंहास्याद् भूततारिणी।

ॐ पूर्वस्यां दिशि चाग्नेये दक्षिणे नैर्ऋते तथा।।

वारुणे चैव वायव्ये कौबेरे रौद्रगौरवे।

छिद्रस्थानेषु सर्वेषु रन्ध्रदेशेषु च क्रमात्।।

कर्त्रीखर्पधरा देवी पातु मामुग्रतारिणी।

सैन्यानि वाहनान्येव गजाश्वादीनि मेऽवतु।।

उग्रापत् तारिणि देवी सर्वमंगलदायिनी।

गोत्रं मित्राणि मे रक्ष पत्नीः प्रणयशालिनीः।।

महोग्रतारिणी पातु सर्वभीति विनाशिनी।

ॐ हूंकारबीजोद्भवे लोलजिह्वे भयंकरि।।

कर्त्तखर्पधरे उग्रे उग्रतारे नमोऽतुते।

आकाशनिलये तारे त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।।

सिद्धानां शुद्धिदे शुद्धे नमस्ते चोग्रतारिणी।

सर्वत्र रक्ष मां देवि भयेभ्यश्चोग्रतारिणी।।

प्रसादादुग्रताराया न मां हिंसन्ति हिंसकाः।

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं स्त्रीं हसस्त्रीं स्फुर-स्फुर हसस्त्रीं फट् प्रस्फुर-प्रस्फुर स्त्रीं ह्रीं चट-चट हूं ह्रीं श्रीं हसकलरीं प्रचट-प्रचट हूं ह्रीं कह-कह क्ष्रीं क्ष्रीं क्रों हूं वम-वम स्त्रीं हूं मे रिपुन् घातय-घातय हूं फट् क्लीं क्रों ठः क्ष्रीं सः हसक्षमलवरयूं हसक्षमलवरयीं हसखफ्रें ह्सौं सहूं हंसः सोहं हूं फट् सोहं सर्वांग मेऽवतु तारिणं।

पातु मे सर्वदा नित्या सर्वमंत्र प्रबोधिनी।

भैरवी सुन्दरी काली मातंगी छिन्नमस्तका।।

नीलसरस्वती चेति मंत्रषट्कमुदाहृतम्।

इति ते कथितं वत्स कथितं देवदुर्लभम्।।

त्रैलोक्यविजयं नाम ब्रह्ममंत्रैक विग्रहम्।

अनेन कवची भूत्वा भावयन्नुग्रतारिणीम्।।

आधारस्थां परां शक्तिमाकुच्यानीय यत्नतः।

षडंगसहितां मूर्ध्नि परानन्दे निर्माल्य च।।

सहजानन्दजं तेज आत्माभेदेन भावय।
शिवोऽहं भैरवश्चाहं नित्यानन्दोऽहमव्ययः।।
संहर्त्ताऽहं रिपूणां वै महोग्रतारिणि ह्यहम्।
सर्वशक्तिमयो ब्रह्मरूपोऽहं तारिणीमयः।।
इत्यात्मानं भावयस्त्वं मंत्राण्यरिषु योजयः,
ब्रह्ममंत्रं स्मरन् मंत्रतेजोभिरुज्ज्वलान्यपि।
दह्यन्त्यविरलान्येव स्वशुष्कान्यनलो यथा।।
ब्रह्ममंत्रैः पुटं कृत्वा यो जपेत् तारिकामनुम्।
कवचं वा तारिकायास्तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।।

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों ह्रीं हूं श्रीमदेकजटे ब्रह्मषोडशीस्वरूपिणी त्रिपुरसुन्दरि ह्रीं त्रीं हूं फट् कएइलह्रीं स्त्रीं हूं नीलसरस्वती महातारे सर्वसिद्धि प्रयच्छ ॐ ह्रीं क्लीं लौं स्त्रीं फट् स्वाहा।

माहात्म्यम्–

यः पठेत् कवचं दिव्यं महोग्रायां इदं शुभम्।

मंत्रसिद्धिर्भवेत् तस्य पुरश्चर्या बिना द्रुतम्।।

सिद्धयोऽष्टौ करस्थाः स्युर्देवीपुत्रोऽयमीरितः।

धर्मार्थकाम मोक्षाणां भजनोऽयं न संशयः।।

या स्त्रियो भाग्यतो लब्ध्वा धारयन्ति इदं महत्।

कवचं तत्प्रभावेण दिव्यान् पुत्रान् समाप्नुयुः।।

सौभाग्यं विपुलं भोग्यमारोग्यं सर्वसम्पदः।

प्राप्नुवन्ति जयपराः साक्षाद् देवीति सोच्यते।।

इतीदं कवचं वत्स कथितं तव भक्तितः।

मम प्राणाधिकं ह्येतद् गोप्तत्रयं तत् प्रयत्नतः।।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

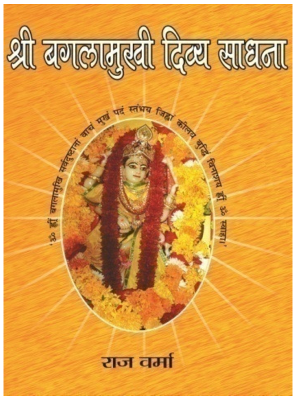

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413